स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकताः उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में

66

प्राप्तिः 18.08.2024
स्वीकृतः 18.08.2024

डॉ0 प्रकाश लखेड़ा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विभाग,
स्वा0 वि0रा0स्नात0 महाविद्यालय
लोहाघाट

गीता
शोधार्थी, राजनीति विभाग,
स्वा0 वि0रा0स्नात0 महाविद्यालय
लोहाघाट
ईमेलः*geetanirmalvishuakarma@gmail.com*

सारांश

स्वामी विवेकानन्द एक महान शिक्षाविद् थे उनका मानना था कि शिक्षा ही मानव जाति का उद्धार करती है। हमारे समाज को शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। स्वामी जी हमारी दयनीय स्थिति का मूल कारण शिक्षा को मानते थे। उन्होंने समाज के सभी लोगों को शिक्षा तथा ज्ञानार्जन के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की बात कही, स्वमी जी ने यह भी तर्क दिया कि यदि ब्राह्मण अपने आप को बहुत मेधावी समझते हैं और शूद्र को जड़बुद्धि मानते हैं तो शूद्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

आज उत्तराखण्ड राज्य में शिक्षा का प्रचार–प्रसार तेजी से हो रहा है, यह सब स्वामी जी की दूरदर्शिता का ही फल है। उत्तराखण्ड राज्य में कई स्थानों पर अनुसूचित जाति, जनजाति के बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय खोले गये हैं। स्वामी जी के इन्हीं शैक्षिक विचारों के कारण ही समाज के निम्न वर्ग के लोग समाज की मुख्य धारा से जुड़ने लगे हैं। सभी वर्गो में समानता के भाव जाग्रत हो रहे हैं। स्वामी जी कहते थे कि युवा शक्ति ही अपने राष्ट्र को प्रगति की राह पर ले जा सकती है। इसी तरह उत्तराखण्ड की युवा पीढ़ी भी अपने राज्य को बुलंदियों पर ले जा रही है। अपने कौशल, बुद्धि और ज्ञान से नये–नये अविष्कार कर रही है। स्वामी जी ने अपने व्याख्यानों से हमेशा युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

स्वामी जी कहते थे कि अगर आप अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहते हो तो उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक आपको लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। स्वामी ने सदैव सैद्धान्तिक शिक्षा के बजाय व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया। उनका मानना था कि अगर आप पैसे वाले है परन्तु अच्छे इन्सान नहीं हैं तो

आपकी शिक्षा और शिक्षित होने का कोई अर्थ नहीं है। स्वामी जी की नस–नस में भारतीयता तथा आध्यात्मिकता कूट–कूटकर भरी हुई थी। इसलिए उनके शिक्षा–दर्शन का आधार भारतीय वेदान्त और उपनिषद ही रहे।

उक्त शोध–पत्र में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में, का वर्णन किया गया है।

मुख्य बिन्दु

जीवन–परिचय

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 ई0 को कलकत्ता के एक कुलीन क्षत्रीय परिवार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। आगे चलकर यही नरेन्द्रनाथ विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुये। इनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। नरेन्द्र से पहले उनके दो लड़कियाँ थी। बेटे का मुँह देखने की उनके मन में बड़ी अभिलाषा थी, इसलिए सुबह–शाम शिव–मंदिर जाकर प्रार्थना करने लगी। इस प्रकार बेटे का जन्म शिव के वरदान से हुआ, इसलिए उन्होंने उसका नाम वीरेश्वर रखा। घर में यही नाम चलता था और प्रियजन 'बिले' कहकर पुकारते थे।

नरेन्द्र को विचारकों और वैज्ञानिकों की समष्द्ध परम्परा विरासत में मिली थी, उनके परदादा राममोहन दत्त कलकत्ता सुप्रीमकोर्ट के नामी वकील थे। समय के साथ–साथ चलते हुए अर्थ और मोक्ष, भोग और त्याग तथा आधुनिक और प्राचीनता दत्त परिवार के स्वभाव तथा चरित्र में घुल–मिल गई थी। राममोहन के इकलौते बेटे दुर्गाचरण ने संस्कृत और फारसी पढ़ी थी, साथ ही कामचलाऊ अंग्रेजी भी सीखी थी और वे छोटी सी उम्र में वकालत करने लग गये थे। परन्तु धन कमाने में उनकी ज्यादा रूचि नहीं थी। दुर्गाचरण सत्संग और शास्त्र–चर्चा के अवसर और सुयोग खोजते रहते थे। जब उनकी उम्र सिर्फ पच्चीस वर्ष थी तो उत्तर–पश्चिम प्रदेशों से आए वेदान्ती साधुओं से वे इतने प्रभावित हुए कि घर–बार छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लिया। प्रतिवियोग में तड़पती हुई जवान पत्नी के लिए गोद का नन्हा बालक ही एकमात्र सहारा रह गया। संन्यासी प्रथा के अनुसार बारह वर्ष बाद जब दुर्गाचरण अपनी जन्मभूमि का दर्शन करने आए तो पत्नी का एक साल पहले देहान्त हो चुका। उन्होंने अपने बालक पुत्र विश्वनाथ को आशीर्वाद दिया और चले गए।

यह विश्वनाथ ही नरेन्द्रनाथ के पिता थे। उन्होंने भी वकालत का पैत्रिक धंधा अपनाया था। लेकिन वकालत में व्यस्त रहते हुए भी पारिवारिक परम्परा के अनुसार शास्त्र–चर्चा तथा अध्ययन के प्रति उनका विशेष अनुराग था।[1]

1870 ई0 में जब नरेन्द्र सात वर्ष के थे तो उनका उच्च विद्यालय में नाम लिखवाया गया। उनकी असाधारण बुद्धि ने शीघ्र ही उनके शिक्षकों एवं सहपाठियों का ध्यान आकर्षित कर लिया था। अंग्रेजी एक विदेशी भाषा थी, अतः प्रारम्भ में उन्हें उससे अरूचि थी, परन्तु शीघ्र ही उन्होने उसे आग्रहपूर्वक सीखना शुरू किया विद्यालय के पाठ्यक्रम में उनका कम समय लगता था, इसलिए उनकी अपरिमित शक्ति का अधिकांश भाग वाह्य क्रियाकलापों में खर्च होता था। 1879 ई0 में उन्होंने

हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। उच्च शिक्षा के लिए 1879 ई0 में नरेन्द्र ने कलकत्ते के प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया। फिर एक वर्ष बाद उन्होंने स्कॉटिश जनरल मिशनरी बोर्ड द्वारा स्थापित जनरल एसेम्बलीज इन्स्टीट्यूशन में दाखिला लिया, यही संस्था बाद में स्कॉटिश चर्च कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध हुई।[2] वर्ष 1884 ई0 में स्नातक की उपाधि के बाद उन्होंने विधि की पढ़ाई के लिए दाखिला किया किन्तु युवा नरेन्द्र की बौद्धिक अभिलाषा इसमें पूर्ण नहीं हुई और 1886 ई0 में उन्होंने भौतिक जीवन को जानकर एक संत की तरह जीवन जीने का फैसला किया। अपने स्नातक की पढ़ाई के दौरान ही वे श्री रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आए और इसके बाद उनका अधिकतर समय उन्हीं के साथ बीता। परमहंस जी के प्रभाव के कारण ही स्वामी जी ने भौतिक वस्तुओं का परित्याग कर दिया था और इसके बाद उनका जीवन एक सन्यासी के रूप में व्यतीत हुआ। 1893 ई0 के धर्म–सम्मेलन में उनके भाषण ने उनकी विद्वता और दर्शन को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली, इसके बाद उन्होंने अपने जीवन के सात वर्ष विभिन्न सामाजिक कार्यो में व्यतीत किये। इस प्रकार 4 जुलाई, 1902ई0 में उन्तालीस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने इस संसार से अपना देह त्याग किया।

स्वामी विवेकानन्द की प्रमुख कृतियाँ

1. कर्मयोग 2. भक्तियोग 3. राजयोग 4. प्रेमयोग 5. ज्ञानयोग 6. गीता और कष्ण 7. अ जर्नी टू अब्सोलूट (A Journey to Absolute)[3]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल उन सूचनाओं से ही नहीं है, जो बालकों के मस्तिष्क में बलपूर्वक ठूँसी जाती है। स्वामी जी ने कहा है कि यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– **''शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।''**[4]

शिक्षा को स्वामी जी ने समाज की रीढ़ माना है। उनके अनुसार शिक्षा मनुष्यता सम्पूर्णता का प्रदर्शन है जो शिक्षा मनुष्य में आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास न जगाए, उस शिक्षा का कोई फायदा नहीं है। स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन एक दीपक के समान है, जिसकी रोशनी से इस संसार का और उत्तराखण्ड के लोगों का जीवन हमेशा जगमगाता रहेगा। इनके कार्य पूरे संसार के लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

आत्मिक एवं बौद्धिक उन्नयन हेतु शिक्षा की महत्ता सर्वविदित है। शिक्षा मानव विकास की धुरी है। इससे ही मनुष्य बनता और बिगड़ता है। मनुष्य को जैसी शिक्षा मिलती है, वैसा ही वह बनता है। अच्छी शिक्षा द्वारा परिष्कृत होकर मनुष्य श्रेष्ठ, सच्चरित्र एवं संस्कारवान बनता है। स्वामी विवेकानन्द अपने देश की शिक्षा व्यवस्था के उन्नयन हेतु सचेष्ट थे। वर्तमान शिक्षा–पद्धति को वे बाबुओं का निर्माण करने वाला यन्त्र मानते थे। इस शिक्षा पद्धति को वे ऋणात्मक या अभावात्मक बताते थे जिसमें जीवन के वास्तविक मूल्यों की कुछ भी शिक्षा नहीं मिलती है। उनका ध्येय मनुष्य का सृजन करने वाली शिक्षा–पद्धति को अंगीकार करना था। शिक्षा के लिये स्वामी जी ने दैहिक, मानसिक और आत्मिक समन्वय पर बल दिया।[5]

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी जी का शिक्षा के प्रति अत्यन्त विस्तृत दृष्टिकोण था। स्वामी जी ने यह भी बताया कि भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के पश्चात यहाँ के नागरिकों को पाश्चात्य विद्वानों का अध्ययन करके तकनीकी शिक्षा की भी व्यवस्था करनी चाहिए। जिससे उद्योग–धन्धे विकसित हो जायें और हमारा देश पुनः धन–धान्य से परिपूर्ण हो जाये। इस तरह स्वामी जी ने सैद्धान्तिक शिक्षा का खण्डन करते हुए व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया। इस बारे में उन्होंने भारतीयों को सचेत करते हुए कहा– **''तुम को कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यावहारिक बनना पड़ेगा, सम्पूर्ण देश का सिद्धान्तों के ढेरों ने विनाश कर दिया है।''**[6]

स्वामी जी के अनुसार समाज में प्रत्येक मनुष्य समान है। सभी जाति–धर्म के लोगों को शिक्षा का समान अवसर मिलना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार यदि ब्राह्मण के लिए एक शिक्षक की जरूरत है तो शूद्र के लिए दस शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए। अर्थात् जो लोग जन्म से कमजोर हैं उनके लिए और अधिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– **''यदि निर्धन शिक्षा तक नहीं पहुँच पाते तो स्वयं शिक्षा को खेत, कारखाने या कहीं भी काम करने वाले लोगों के पास पहुँच जाना चाहिए।''**[7]

स्वामी जी के अनुसार भारतवर्ष के सभी अनर्थो की जड़ है–जनसाधारण की गरीबी, पाश्चात्य देशों के गरीब तो निरे पशु हैं, उनकी तुलना में हमारे यहाँ के गरीब देवता हैं, इसीलिए हमारे यहाँ के गरीबों की उन्नति करना अपेक्षाकृत सहज है। अपने निम्न श्रेणी वालों के प्रति हमारा एकमात्र कर्तव्य है– उन्हें शिक्षा देना, उन्हें सिखाना कि इस संसार में तुम भी मनुष्य हो, तुम लोग भी कोशिश करने पर अपनी सब प्रकार की उन्नति कर सकते हो। स्वामी जी के अनुसार प्रत्येक जाति, प्रत्येक पुरूष और प्रत्येक स्त्री को अपनी–अपनी मुक्ति स्वंय सिद्ध करनी पड़ेगी, उनमें विचार पैदा कर दो, बस उन्हें उसी एक सहायता की जरूरत है और शेष सब कुछ इसके बाद अपने आप ही हो जाएगा। स्वामी जी कहते थे कि प्रत्येक गाँव में एक निःशुल्क पाठशाला खोल भी दे ंतो इससे कुछ काम नहीं होगा क्योंकि भारत में इतनी ज्यादा गरीबी है कि गरीब लड़के पाठशाला जाने के बजाय खेतों में अपने माता–पिता को मदद देना या दूसरे किसी उपाय से रोटी कमाने का प्रयास करना ज्यादा पसंद करेंगे।

स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि यदि पहाड़ मुहम्मद के पास न आए तो मुहम्मद ही पहाड़ के पास क्यों न जाए? यदि गरीब शिक्षा के मंदिर न जा सके तो शिक्षा को ही उसके पास जाना चाहिए।

हमारे देश में हजारों एकनिष्ठ और त्यागी साधु हैं, जो गाँव–गाँव धर्म की शिक्षा देते फिरते हैं। यदि उनमें से कुछ सुनियंत्रित रूप से ऐहिक विषयों के भी शिक्षक बन जाएँ तो गाँव–गाँव, घर–घर जाकर वे केवल धर्मशिक्षा ही नहीं देंगे, बल्कि ऐहिक शिक्षा भी दिया करेंगे। स्वामी जी कहते थे कि कल्पना कीजिए कि उनमें से एक ही शाम को साथ में एक मैजिक लैन्टर्न, एक गोलक और कुछ नक्शे आदि लिये किसी गाँव में गए। इनकी मदद से वे अनपढ़ लोगों को बहुत कुछ गणित, ज्योतिष और भूगोल सिखा सकते हैं। विभिन्न जातियों के सम्बन्ध की कहानियाँ सुनकर वे गरीबों को नाना प्रकार के समाचार दे सकते हैं जितनी जानकारी वे गरीब जीवन भर पुस्तकें पढ़ने से न पा

सकेंगे, उससे कई सौ गुना अधि कवे इस तरह बातचीत द्वारा पा सकेंगे। इसके लिए एक नियंत्रित कार्य–प्रणाली की जरूरत है, जो पुनः धन पर निर्भर करती है। इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने के लिए भारत में मनुष्य तो बहुत हैं, पर हाय! वे निर्धन हैं[8]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यः– स्वामी जी के अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए–

(i) पूर्णता को प्राप्त करने का उद्देश्य :– स्वामी जी ने शिक्षा का प्रथम उद्देश्य अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना बताया है। मनुष्य के अन्दर लौकिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान पहले से ही मौजूद होता है। इस पर पड़े आवरण को उतार फेंकना ही शिक्षा है। इसलिए मुनष्य को अन्तर्निहित ज्ञान अथवा पूर्णत्व की अभिव्यक्ति करनी चाहए।

(ii) शारीरिक एवं मानसिक विकास का उद्देश्यः– स्वामी जी ने शारीरिक उद्देश्य पर जोर दिया क्योंकि आज के बालक भविष्य में निर्भीक एवं बलवान योद्धा के रूप में गीता का अध्ययन करके देश की उन्नति कर सके। शिक्षा के मानसिक उद्देश्य पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिसे प्राप्त करके मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

(iii) नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास का उद्देश्यः– स्वामी जी ने कहा कि किसी भी देश की महानता केवल उसके संसदीय कार्यो से नहीं होती बल्कि उसके नागरिकों की महानता से होती है। इसलिए नागरिकों को महान बनाने के लिए उनका नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास बहुत जरूरी है।

(iv) चरित्र निर्माण का उद्देश्यः– स्वामी विवेकानन्द के अनुसार चरित्र निर्माण के लिए मनुष्य को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहए। ब्रह्माचर्य के द्वारा मनुष्य में बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ विकसित होंगी साथ ही वह मन, वचन और कर्म से पवित्र बन जायेगा।

(v) आत्मविश्वास, श्रद्धा एवं आत्मत्याग की भावना का उद्देश्यः– स्वामी जी के अनुसार मनुष्य को अपने ऊपर विश्वास, श्रद्धा और आत्मत्याग की भावना को विकसित करना चाहिए। उन्होंने कहा– **'उठो जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाये।'**

(vi) विभिन्नता में एकता की खोज का उद्देश्यः– आध्यात्मिक तथा भौतिक जगत स्वामी जी के अनुसार एक ही है। अतः विभिन्नता की अनुभूति दोष अथवा माया है। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि बालक विभिन्नता में एकता की अनुभूति करने लगे।

(vii) धार्मिक विकास का उद्देश्यः– स्वामी जी चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उस सत्य अथवा धर्म को महसूस कर सके जो उसके अन्दर छिपा हुआ है। इसके लिए उन्होंने मन तथा हृदय के प्रशिक्षण पर जोर दिया और बताया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसको प्राप्त करके बालक अपने जीवन को पवित्र बना सके तथा उसमें आज्ञापालन, समाज सेवा एवं महापुरूषों और सन्तों के अनुकरणीय आदर्शो को अपनाने की क्षमता विकसित हो जाये।[9]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हमारे जीवन का चरम लक्ष्य आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने लौकिक समृद्धि को कोई जगह नहीं दी, उन्होंने पाठ्यक्रम में उन सभी विषयों को शामिल किया जिनके अध्ययन से आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ भौतिक उन्नति भी होती रहे। स्वामी जी ने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए, धर्म, दर्शन, पुराण, उपनिषद, साधु संगत, उपदेश तथा कीर्तन और लौकिकी समृद्धि के लिए भाषा, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, कला, को पाठ्यक्रम में शामिल किया। स्वामी जी छात्रों को शारीरिक दृष्टि से सदृष्ढ़ देखना चाहते थे। अतः वे पाठ्यक्रम में शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ देखना चाहते थे।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षण–पद्धति

स्वामी जी का मानना था कि यदि व्यक्ति एकाग्र होकर अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करें, तो उसे इसी अर्थ में ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। जो व्यक्ति किसी भी विषय में या ज्ञान–विज्ञान की किसी भी धारा में यदि अधिकारपूर्ण एवं पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, तो उसे एकाग्रता को अपनाना होगा। व्यक्ति का मन बड़ा चंचल है, मन को काबू में रखने के लिए जरूरी है कि हम अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण एवं वासनाओं का त्याग कर सकें, इसके लिए ब्रह्मचर्य व्रत अपनाना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य से व्यक्ति में क्षमताएँ विकसित होती है। इससे उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं स्मरण शक्ति प्रबल होती है। स्वामी जी का मत था कि छात्र को ऐसा वातावरण देना चाहिए कि वह स्वयं सीख सके। ऐसा कोई माली नहीं होता जो पौधों का पेड़ बना दे। हाँ, वह इतना अवश्य कर सकता है कि इस बात का ध्यान रखे कि पौधे को कोई क्षति नहीं पहुँचे। इसी प्रकार शिक्षक को चाहिये कि छात्र के सीखने की स्वतन्त्रता का सम्मान कर तथा छात्र को स्वतः शिक्षित होने दे।[10]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षक की भूमि का

स्वामी जी के अनुसार एक शिक्षक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है–

(i) शिक्षक को आध्यात्मिक दृष्टि से परिपक्व होना चाहिए।

(ii) शिक्षक को पवित्र एवं ब्रह्मचर्य होना चाहिए।

(iii) शिक्षक को दण्ड विरोधी प्रवृत्ति का होना चाहिए।

(iv) शिक्षक को एक अच्छा मनोवैज्ञानिक होना चाहिए, जिससे वह छात्र को पूर्ण रूप से जान सके।

(v) शिक्षक में त्याग, साहस और विश्वबंधुत्व का गुण होना चाहिए।

स्वामी जी को स्वशिक्षा में विश्वास था। वे कहते थे कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपना शिक्षक स्वयं है। बाह्य शिक्षक तो केवल ऐसे सुझाव प्रस्तुत करता है, जिन से आन्तरिक शिक्षक (आत्मा) को काम करने व समझने के लिए चेतना मिलती है। स्वामी जी के अनुसार– **''शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र तथा पथ–प्रदर्शक है, जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है।''** स्वामी विवेकानन्द के अनसुार– **''शिक्षा उन विचारों की अनुभूति कर लेने का नाम है, जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो।''** [11]

सुझावः–

1. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों को उत्तराखण्ड के बालकों को आत्मसात करना चाहिए।
2. उत्तराखण्ड के शिक्षकों को स्वामी जी द्वारा बताये गये ब्रह्मचर्य जीवन का पालन करना चाहिए।
3. स्वामी जी द्वारा दिये गये शैक्षिक विचारों का अधिक से अधिक विस्तार किया जाय।
4. आज की भौतिकवादी दुनिया में आध्यात्मिक दर्शन को वर्तमान युवा पीढ़ी तक पहुँचाना बहुत जरूरी है।

निष्कर्षः स्वामी विवेकानन्द एक संन्यासी होने के साथ–साथ एक महान शिक्षाविद् भी थे, जिन्होने पूरे विश्व को अपने ज्ञान की बाती से प्रकाशित किया। स्वामी विवेकानन्द के जीवन का उद्देश्य मनुष्य निर्माण, शिक्षा से चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा उद्धार, विज्ञान तथा तकनीकि के द्वारा विकास करना था। ये विचार आज के युग में बहुत प्रासंगिक सिद्ध हो रहें हैं। स्वामी जी ने आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों प्रकार के मूल्यों का अद्धभुत समावेश दर्शाया है। इनके द्वारा बताये गये शैक्षिक विचार आज भी पूर्णतया नवीन प्रतीत होते हैं। ये शैक्षिक विचार शिक्षा के क्षेत्र में एक सेतु की तरह काम कर रहे हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में में मानवीय मूल्यों में जो गिरावट आई है, उसमें स्वामी जी के शैक्षिक विचार मेरूदण्ड के समान हैं अतः हम कह सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्तराखण्ड के लिए आवश्यक सिद्ध हो रही है।

सन्दर्भ

1. रहबर हंसराज, 'योद्धा संन्यासी विवेकानन्द', राजपाल एण्ड सन्स, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली–6, (2000), पृ0 **14**।
2. निखिलानन्द स्वामी, 'विवेकानन्द एक जीवनी', अद्वैत आश्रम, रामकृष्ण मठ 5 डिही एण्टाली रोड, कोलकाता, (2019), पृ0 **22**।
3. 'भारतीय राजनीतिक चिन्तन', कुलसचिव उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय, हल्द्वानी नैनीताल (2019), पृ0 **67**।
4. सक्सैना, एन0आर0 स्वरूप, चतुर्वेदी, डॉ0 (श्रीमती) शिखा, कुमार, डॉ0 धमेन्द्र चतुर्वेदी, डॉ0 शिल्पा, 'उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक', आर0 लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, (2014), पृ0 **354**।
5. विवेकानन्द स्वामी, 'द कम्पलीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानन्द,' खण्ड–06, अद्वैत आश्रम मायावती, चम्पावत, (1956), पृ0 **364**।
6. पूर्वउद्गृत, (संख्या–01), पृ0 **355**।
7. गाबा, ओम प्रकाश, 'भारतीय–राजनीति विचारक, नेशनल पेपर बैक्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली, (2021) पृ0 **168**।
8. राजस्वी एम. आई., 'विश्वगुरू विवेकानन्द', प्रकाश बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, (2022), पृ0 **295–296**।
9. पूर्वउद्गष्त, (संख्या–01), पृ0 **22**।
10. https://cvrrentshub.com
11. नभाटा, नई, दिल्ली, 13 मई, 2000, पृ0 **06**।